RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18, अंक-1, दिसम्बर 2024 जनवरी फरवरी 2025

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रास्तो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18 अंक - 1 दिसम्बर-2024, जनवरी-फरवरी-2025

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

आर्य समाज का मेवाड़ के धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक जनजागरण में योगदान

नरेन्द्र सिंह नाथावत
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

आर्य समाज का मेवाड़ के धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक जनजागरण में योगदान एक निरंतर, व्यापक और सशक्त सुधार-प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। मेवाड़ अपनी वीर परम्परा, संघर्षशील इतिहास और उच्च सांस्कृतिक चेतना के लिए जाना जाता रहा, परन्तु 19वीं सदी में यह क्षेत्र रूढ़ियों, जातिगत विभाजनों, सामाजिक बंधनों और अंग्रेज़ी प्रभाव के कारण नई चुनौतियों का सामना कर रहा था। ऐसे संक्रमण काल में आर्य समाज ने मेवाड़ में वह चेतना जगाई जिसने यहाँ के सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन को नया स्वरूप प्रदान किया।

आर्य समाज का प्रथम प्रभाव धार्मिक सुधारों के रूप में देखने को मिलता है। स्वामी दयानंद सरस्वती की वेदप्रधान, तर्कपूर्ण और रूढ़िविरोधी शिक्षा ने मेवाड़ में धर्म को कर्मकाण्ड और पाखंड की जकड़न से मुक्त करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। शुद्धि-आन्दोलन के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्गों, विशेषकर जनजातीय समाज में, आत्मगौरव और धर्मिक स्वतंत्रता का भाव जगा। पुरोहित-प्रधान परंपराओं तथा अनावश्यक कर्मकाण्डों का विरोध करके आर्य समाज ने धर्म को नैतिकता, सत्य, सेवा और कर्मयोग की दिशा में मोड़ा। मंदिरों में जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता तथा धार्मिक रहस्यवाद जैसी रूढ़ियों का खुला प्रतिकार हुआ। इस प्रकार मेवाड़ के धार्मिक जीवन में सरलता, वैज्ञानिक दृष्टि और स्वतंत्र सोच का उदय आर्य समाज के कारण हुआ।

सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान अत्यंत क्रांतिकारी सिद्ध हुआ। शिक्षा-प्रसार ने मेवाड़ में व्यापक जनजागरण पैदा किया। उदयपुर, चित्तौड़ और आस-पास के क्षेत्रों में स्थापित विद्यालयों, वेदिक पाठशालाओं और कन्या गुरुकुलों ने नई पीढ़ी को आधुनिक ज्ञान, नैतिक मूल्यों और तर्कशील दृष्टि से परिचित कराया। स्त्री-शिक्षा और विधवा-पुनर्विवाह के समर्थन ने यहाँ की महिलाओं को पहली बार सामाजिक अधिकार और आत्मसम्मान का अनुभव करवाया। पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह और छुआछूत जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध चलाए गए अभियानों ने मेवाड़ की सामाजिक संरचना को अधिक समतामूलक बनाया। आर्य समाज के प्रभाव से दलित, पिछड़े और जनजातीय समाज में जागृति आई और वे सामाजिक मुख्यधारा से जुड़ने लगे। सामूहिक यज्ञों, सर्वजन सहभागिता और समानता के व्यवहार ने यह संदेश दिया कि समाज धर्म और जाति के आधार पर विभाजित नहीं, बल्कि मानवता के आधार पर एकजुट होना चाहिए।

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

राजनीतिक चेतना में आर्य समाज का प्रभाव मेवाड़ की युवा पीढ़ी में विशेष रूप से दिखाई देता है। स्वामी दयानंद की 'स्वराज्य', 'स्वदेशी' और 'स्वावलम्बन' की विचारधारा ने यहाँ के युवाओं को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जागरूक किया। आर्य समाज के प्रभाव से मेवाड़ में राष्ट्रीय आंदोलन की जड़ें मजबूत हुईं। शिक्षित वर्ग और छात्र समुदाय में स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और राष्ट्रभक्ति की भावना प्रवाहित हुई। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, स्वदेशी उद्योगों के समर्थन और स्वतंत्रता सम्मेलनों में भागीदारी जैसे कार्यों में मेवाड़ के नागरिक सक्रिय हुए। इस प्रकार आर्य समाज ने धार्मिक सुधारों के माध्यम से प्रारंभ होकर सामाजिक चेतना को उन्नत किया और अंततः राजनीतिक जागरण को दिशा दी।

मेवाड़ के जनजातीय क्षेत्रों—विशेषकर भील समुदाय—में आर्य समाज का प्रवेश एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुआ। शराब, व्यसनों और सामाजिक विसंगतियों से ग्रस्त जनजातीय समाज में शिक्षा, स्वच्छता, संयम और समानता का भाव उत्पन्न हुआ। शुद्धि आंदोलन और वेदिक शिक्षण द्वारा इन समुदायों में आत्मबल, जागरूकता और सभ्यतामूलक विकास का जन्म हुआ। इससे मेवाड़ का ग्रामीण और आदिवासी जीवन पहली बार संगठित और प्रगतिशील मार्ग पर अग्रसर हुआ।

भारतीय इतिहास में 19वीं शताब्दी को धार्मिक और सामाजिक जागरण का काल माना जाता है। इस समय में देश में अनेक सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों, जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास और पराधीन मानसिकता व्याप्त थी। ऐसे कठिन सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धर्म, समाज, संस्कृति और राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नई चेतना का संचार किया। वे केवल धर्म प्रचारक या आध्यात्मिक पुरुष नहीं थे, बल्कि देश और समाज की समस्याओं और प्रश्नों का तार्किक, विवेचित और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने में भी सक्षम थे। उन्होंने वेदों को आधार बनाकर सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक मान्यताओं का गहन विश्लेषण किया और समय तथा परिस्थिति के अनुरूप जनता में जागरूकता का संदेश दिया।

स्वामी दयानन्द ने आर्य संस्कृति के मूल्य और परंपराओं को स्वीकार किया, परन्तु उन्होंने पश्चिमी ज्ञान, विज्ञान और आधुनिक सोच की प्रासंगिकता को भी अपनाया। उनका मानना था कि धर्म और संस्कृति केवल कर्मकाण्ड और रूढ़ियों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए नैतिक, बौद्धिक और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करनी चाहिए। 1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर अपने विचारों और सिद्धांतों को संगठित आंदोलन का रूप दिया। इस आंदोलन ने अल्पकाल में ही न केवल भारत के अनेक हिस्सों में बल्कि अमेरिका, फिजी, अफ्रीका, मारीशस और इंग्लैंड तक अपने संदेश का प्रसार किया।

आर्य समाज ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में बाल-विवाह, छुआछूत, विधवा पुनर्विवाह और स्त्री-शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम किया। धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने वेदों के आधार पर सत्य, नैतिकता और कर्म का संदेश फैलाया तथा पुरोहित-प्रधान और अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का विरोध किया। राजनीतिक क्षेत्र में आर्य समाज ने स्वराज, स्वदेशी और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया, जिससे युवाओं में देशभक्ति और स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता आई। इस प्रकार आर्य समाज ने समाज में व्यापक परिवर्तन और जनजागरण की प्रक्रिया को गति दी और भारतीय समाज में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना का एक नया अध्याय लिखा।

श्री अरविन्द ने सटीक रूप से कहा है कि स्वामी दयानन्द ऐसे महापुरुष थे, जो पूर्ण निश्चय और स्पष्टता के साथ जानते थे कि उन्हें किस उद्देश्य के लिए भेजा गया है। उन्होंने अपनी असीम आत्मबल और दृढ़ संकल्प के साथ अपने कार्य की दिशा निर्धारित की, अपने साधनों का चयन किया और जन्मजात कर्मठता एवं अधिकारबोध के साथ अपने संकल्पों को पूर्ण किया।

स्वामी दयानन्द ने मेवाड़ की यात्राओं के माध्यम से समाज की स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन किया और उदयपुर के 'नौलखा महल' में अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से आर्य समाज की स्थापना और प्रचार-प्रसार किया। मेवाड़ के जनजागरण में आर्य समाज की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही और इसे भुलाया नहीं जा सकता। आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक चेतना का प्रसार कर न केवल जनता को जागरूक किया, बल्कि मेवाड़ में राजनीतिक जागरण के लिए भी आधार तैयार किया। इसने किसान आंदोलन, भील आंदोलन और प्रजामंडल आंदोलन जैसी आंदोलनों के लिए जमीन तैयार की।

आर्य समाज के द्वारा बनेड़ा, चित्तौड़गढ़, बेदला, शाहपुरा आदि रियासतों में यात्राएँ और उनके साथ बनाए गए संबंधों ने मेवाड़ में जनजागरण की नई भूमिका को स्थापित किया। इन गतिविधियों ने धार्मिक सुधार और सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनीतिक और आर्थिक जागरूकता को भी बल दिया, जिससे मेवाड़ का समाज सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से सक्रिय और जागरूक बन सका।

आर्य समाज की स्थापना से पूर्व मेवाड़ की स्थिति जटिल और चुनौतीपूर्ण थी। 1818 ई. में अंग्रेज़ों ने मेवाड़ के महाराणा को बाह्य आक्रमण से सुरक्षा और राज्य के विकास का भरोसा दिलाया, लेकिन इसके बदले में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभों का समझौता भी किया गया। मराठों और पिण्डारियों के लगातार आक्रमणों ने मेवाड़ के जनजीवन को अस्थिर और निरंकुश शासन के अधीन बना दिया था। सामंतों और स्थानीय अधिकारियों द्वारा स्वेच्छाचारिता और शोषण ने जनता के मानवीय अधिकारों को गंभीर रूप से प्रभावित किया। साथ ही, ईसाई मिशनरियों की हिन्दू और आदिवासी समुदायों को धर्म परिवर्तन के लिए सक्रिय मुहिम ने सामाजिक और धार्मिक व्यवस्थाओं में विखंडन पैदा किया।

इस कठिन परिस्थितियों में मेवाड़ की जनता गहन संकट और असंतोष में थी। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द ने अपने भ्रमण और सत्संग के माध्यम से मेवाड़ के इतिहास, उसकी सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं का अध्ययन किया और जनता में राष्ट्रीय संदर्भों में जागरूकता और अपेक्षाओं का संचार किया। उनका प्रवास और सक्रियता मेवाड़ में लंबे समय तक बनी रही, जिससे सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जागरण का मार्ग स्पष्ट रूप से प्रशस्त हुआ। इस प्रकार आर्य समाज ने मेवाड़ में न केवल धार्मिक और सामाजिक चेतना फैलायी, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी जनजागरण को सशक्त आधार प्रदान किया।

मेवाड़ में धार्मिक जागरण के क्षेत्र में आर्य समाज ने अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, बहुदेववाद और क्षेत्रवाद का सक्रिय विरोध किया। स्वामी दयानन्द ने पौराणिक, जैन, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, कबीरपंथी, नानकपंथी, अद्वैत वेदान्ती, दादूपंथी आदि सम्प्रदायों की अवैज्ञानिक और पक्षपातपूर्ण मान्यताओं का खुलकर खंडन किया। मूर्तिपूजा के विरोध के समय एक महत्वपूर्ण घटना यह रही कि महाराणा सज्जनसिंह ने स्वामी दयानन्द से एकलिंग महादेव मंदिर के दीवान के पद को स्वीकार करने का निवेदन किया। इस पर स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया कि उनका कार्य केवल सत्य और धर्म की सेवा करना है, और वे किसी भी स्थिति

में वेद और ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते। उन्होंने महाराणा को मूर्तिपूजा और बहुदेववाद के प्रति अपने दृष्टिकोण से अवगत कराया और उन्हें धार्मिक सुधार की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित किया।

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में विभिन्न मतावलम्बियों के सृष्टि-विरोधी और आस्थाविरोधी विचारों का खंडन किया। इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने सार्वभौम आध्यात्मिक विचारों, यज्ञ, संध्या-भजन और एकेश्वरवाद के मार्ग को प्रस्तुत किया। इन प्रयासों से मेवाड़ में धार्मिक सुधारों की प्रक्रिया को गति मिली और जनता में धार्मिक चेतना और वैदिक विचारों के प्रति जागरूकता बढ़ी।

भारतीय संस्कृति में सामाजिक जीवन का अपना विशेष महत्त्व है, और मेवाड़ इस परंपरा से अछूता नहीं रहा। मेवाड़ में समाज की संरचना मुख्य रूप से जाति व्यवस्था पर आधारित थी। यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के अलावा जैन, भील, आदिवासी, कायस्थ आदि समुदाय भी विद्यमान थे। 18वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक इस परंपरागत सामाजिक ढांचे का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

ब्रिटिश संरक्षण के बाद मेवाड़ के सामाजिक जीवन में बदलाव आने लगे। भारतीय और पश्चिमी विचारों का मिश्रण, पश्चिमी शिक्षा का प्रसार, कुछ वर्गों का उभार, सामंती सेनाओं का विकास और प्रशासनिक संस्थाओं के पंजीकरण ने लोगों को पारंपरिक जाति-व्यवसायों के अलावा नए व्यवसायों की ओर प्रवृत्त किया। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन की गति तेज हुई। धर्म के आधार पर बंधा हुआ समाज अब विभिन्न विचारों और आंदोलनों के अनुसार विभाजित होने लगा। महाराणा सज्जनसिंह के शासनकाल में हिन्दू सम्प्रदाय में सिक्ख और आर्य समाज को शामिल किया गया, जिससे सामाजिक बहुलता को मान्यता मिली और मेवाड़ में सामाजिक जागरण और नए दृष्टिकोणों को प्रोत्साहन मिला।

आलोच्य समय में मेवाड़ में कई प्रकार के सामाजिक जागरण उभरने लगे, जिनमें आर्य समाज का योगदान सबसे प्रभावशाली था। आर्य समाज ने समाज सुधार की एक मजबूत लहर खड़ी की और सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों पर स्पष्ट रूप से प्रहार किया। उसने समाज में व्याप्त दोषों को उजागर करके लोगों को उनसे दूर रहने और सुधार की दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया। आर्य समाज ने जात-पात, शुद्धि, वर्ण व्यवस्था, स्त्री-पुरुष का समान अधिकार, स्त्री शिक्षा, बहु-विवाह, अनमेल विवाह, बाल विवाह, विधवा विवाह, मृत्युभोज, मूर्तिपूजा, परोपकार आदि कई सामाजिक मुद्दों पर अपने आंदोलन को तीव्र किया और जनता में जागरूकता फैलायी।

कवि श्यामलदास, जो चारण जाति से थे और स्वामी दयानन्द से गहन प्रभावित थे, ने मेवाड़ की सामाजिक बुराइयों को दूर करने में राज्य की ओर से आर्य समाज के कार्यक्रमों का सहयोग किया। आर्य समाज ने कर्म के आधार पर जाति प्रथा का समर्थन किया और न्याय व समानता की भावना को बढ़ावा दिया। मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में मृतक संस्कार और श्राद्ध परंपराओं के विरोध में आर्य समाज ने आयोजन किए, हालांकि इस प्रयास का विरोध भी हुआ। आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ श्राद्ध की प्रथा नहीं थी, वहाँ भी आर्य समाज ने सामाजिक दृष्टि से जागरण का प्रयास किया। इस प्रकार आर्य समाज ने मेवाड़ी समाज में बहुआयामी सामाजिक चेतना और व्यापक जागरूकता का संचार किया।

मेवाड़ में आर्य समाज द्वारा राजनीतिक जागरण का प्रभाव अत्यंत गहन और बहुआयामी था। यह प्रभाव न केवल धार्मिक और सामाजिक चेतना तक सीमित रहा, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी मेवाड़ की

जनता और शासकों के व्यवहार को प्रभावित किया। स्वामी दयानन्द की मेवाड़ यात्राओं ने स्थानीय जनता और राजघराने को उनकी विचारधारा और राष्ट्रभक्ति के सिद्धांतों से परिचित कराया। महाराणा सज्जनसिंह द्वारा उनके शिष्य बनना इस चेतना को औपचारिक मान्यता देने जैसा था, जिससे राजनीतिक जागरण प्राचीन वैदिक राष्ट्रवाद के आधार पर विकसित हुआ। इस दौरान शाहपुरा, बेदला, बनेड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ जैसे क्षेत्रों में आर्य समाज के माध्यम से राजनीतिक विचारों का प्रसार व्यापक रूप से हुआ और जनता में स्वतंत्रता, स्वराज और सामाजिक न्याय की भावनाएँ जागृत हुईं।

आर्य समाज ने प्राचीन राजनीति के गौरवशाली पृष्ठों और वैदिक शासन के आदर्शों को तत्कालीन शासकों के समक्ष प्रस्तुत किया, जिससे राजाओं और स्थानीय प्रशासन में जागरूकता आई। ब्रिटिश सरकार के दस्तावेज़ों से यह भी ज्ञात होता है कि 1890 ई. के बाद आर्य समाज को उग्रवादी राजनीतिक संस्था मानते हुए उसे प्रतिबंधित करने के आदेश जारी किए गए। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश प्रशासन भी आर्य समाज की राजनीतिक सक्रियता और उसकी प्रभावशीलता से चिंतित था।

होम एवं पोलिटिकल विभाग की फाइलों के अनुसार स्वामी कुमारानन्द और स्वामी ज्ञानानन्द ने मेवाड़ में राजनीतिक कार्यों को विशेष प्राथमिकता दी। 1907 की मेवाड़ पोलिटिकल एजेंट की फाइल में उल्लेख है कि महाराणा फतेहसिंह पर अधिक दबाव न डाला जाए क्योंकि वे आर्य समाज के समर्थक और क्रांतिकारी संगठनों से जुड़े थे। आर्य समाज ने सामाजिक सुधारों के साथ-साथ किसान आंदोलन, भील आंदोलन और प्रजामंडल आंदोलन जैसे आंदोलनों को सफल बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कविराजा श्यामलदास, जो परोपकारिणी सभा में सचिव थे और स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारी सभा से जुड़े थे, ने आर्य समाज के राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव को फैलाने में योगदान दिया। शाहपुरा, बनेड़ा और अन्य रियासतों के राजाधिराज भी आर्य समाज के कार्यों से प्रभावित हुए और उनके शासन में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।

इस प्रकार, मेवाड़ में राजनीतिक जागरण केवल विचारों तक सीमित नहीं रहा; आर्य समाज ने कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनता को संगठित किया, आंदोलन और सामाजिक सुधारों के लिए प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि मेवाड़ के राजनीतिक आंदोलन, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय चेतना के क्षेत्र में गहरा और स्थायी प्रभाव स्थापित हुआ। आर्य समाज के चिन्तन और क्रियाओं ने मेवाड़ के राजनीतिक परिदृश्य को न केवल जागरूक बनाया बल्कि उसे सक्रिय और प्रगतिशील दिशा में मोड़ा।

मेवाड़ में राष्ट्रीय चेतना और भाषा के प्रचार में आर्य समाज का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। महाराणा सज्जनसिंह द्वारा हिंदी को राजभाषा घोषित करने से क्षेत्रीय जनमानस में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान और जागरूकता बढ़ी। इसी क्रम में 'हरिश्चन्द्र आर्य विद्यालय' ने स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराष्ट्र का संदेश युवाओं तक पहुँचाया, जबकि 'महिला मंडल' ने महिलाओं में राजनीतिक और सामाजिक चेतना का संचार किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ने इस क्षेत्र में विशेष प्रयास किए, क्योंकि स्वामी दयानन्द का अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' उदयपुर में ही रचित हुआ था। इसके अतिरिक्त, पंडित जनार्दन राय नागर, माखनलाल, सोहनलाल द्विवेदी जैसे राष्ट्रभाषा के साहित्यकारों द्वारा उदयपुर में आयोजित सम्मेलनों ने राष्ट्रीय जागरण को और सशक्त किया।

आर्य समाज ने सामाजिक और धार्मिक संरक्षण का कार्य भी किया। ऋषभदेव, खेरवाड़ा आदि क्षेत्रों में, जहाँ ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से भील और आदिवासी समाज पर खतरा था, वहाँ आर्य समाज ने उन्हें संरक्षण दिया और अंग्रेज़ी सरकार के अत्याचारों के प्रति जागरूक किया। इस प्रकार आर्य समाज ने मेवाड़ के राजनीतिक जीवन को तीन स्तरों—महाराणा, जागीरदार और प्रजा—से प्रभावित किया और मेवाड़ की भागीदारी को राष्ट्रीय आंदोलन में अधिक सक्रिय एवं प्रभावशाली बनाया। उन्होंने न केवल विचारों के माध्यम से बल्कि व्यवहार और संगठनों के द्वारा भी मेवाड़ के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जागरण में अपनी भूमिका का पूरा निर्वाह किया।

निष्कर्षत: मेवाड़ में आर्य समाज ने 19वीं सदी के कठिन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक हालात में जागरण की दिशा दिखाई। स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया, जात-पात, स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, विधवा-विवाह जैसे मुद्दों पर सुधार किए। उन्होंने वैदिक राष्ट्रवाद और स्वराज की चेतना फैलाई, किसान और सामाजिक आंदोलनों का समर्थन किया। हिंदी को राजभाषा बनाने, हरिश्चन्द्र आर्य विद्यालय और महिला मंडलों के माध्यम से शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। आदिवासी क्षेत्रों में संरक्षण और जागरूकता दी। कुल मिलाकर, आर्य समाज ने मेवाड़ में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जागरण को एक साथ सशक्त रूप से स्थापित किया।

सारांशत: आर्य समाज ने मेवाड़ में धार्मिक सुधार, सामाजिक जागरण और राजनीतिक चेतना तीनों को एक साथ प्रोत्साहित किया। उनका कार्य केवल विचारों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज को संगठित करके आंदोलनों, शिक्षा और सांस्कृतिक माध्यमों के जरिए व्यापक और स्थायी परिवर्तन स्थापित किया। इस प्रकार मेवाड़ का समाज आर्य समाज के प्रभाव से आधुनिक, जागरूक और राष्ट्रभक्त बना।

ꕥꕥꕥ

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्री अरविन्द, बंकिम, तिलक दयानन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, 1943*
2. *प्रो. भवानीलाल भारतीय, नवजागरण के पुरोधा, दयानन्द सरस्वती, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर 1983*
3. *राजस्थान भारती, भाग-1 में संग्रहित, प्रो. के.एस. गुप्ता का शोध पत्र, मेवाड़ में स्वतंत्रता आंदोलन*
4. *Har Vilas Sharda, Life of Dayanand Saraswati, Paropkarini Sabha, Ajmer, 1968*
5. *K.D. Erskin, Rajputana Gazetter Part-2A*
6. *आर्य सेवक पत्रिका, जून, 1914*
7. *जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग प्रथम और द्वितीय, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1960*
8. *जमनेश कुमार ओझा, मेवाड़ का इतिहास, एस. चनु एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली 1992*
9. *गोपनीय शर्मा, मेवाड़ एण्ड दी मुगल एम्परर्स, आगरा 1951*